डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2012 : मूल्य - पाँच रुपये

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां | अंक : तीसरा | जुलाई - 2012

7 सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह (वारां - भाई गुरदास जी) (हैदराबाद)
बिना दरवाज़े का घर

21 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश
तमाशा

26 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल-जवाब

34 16 पी.एस आश्रम राजस्थान में सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी
धन्य अजायब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस. वाया मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन 099 50 55 66 71 व 098 71 50 19 99
● उपसम्पादक : नन्दिनी ● विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन 099 28 92 53 04
● अनुवादक: मास्टर प्रताप सिंह ● संपादकीय सहयोगी : रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

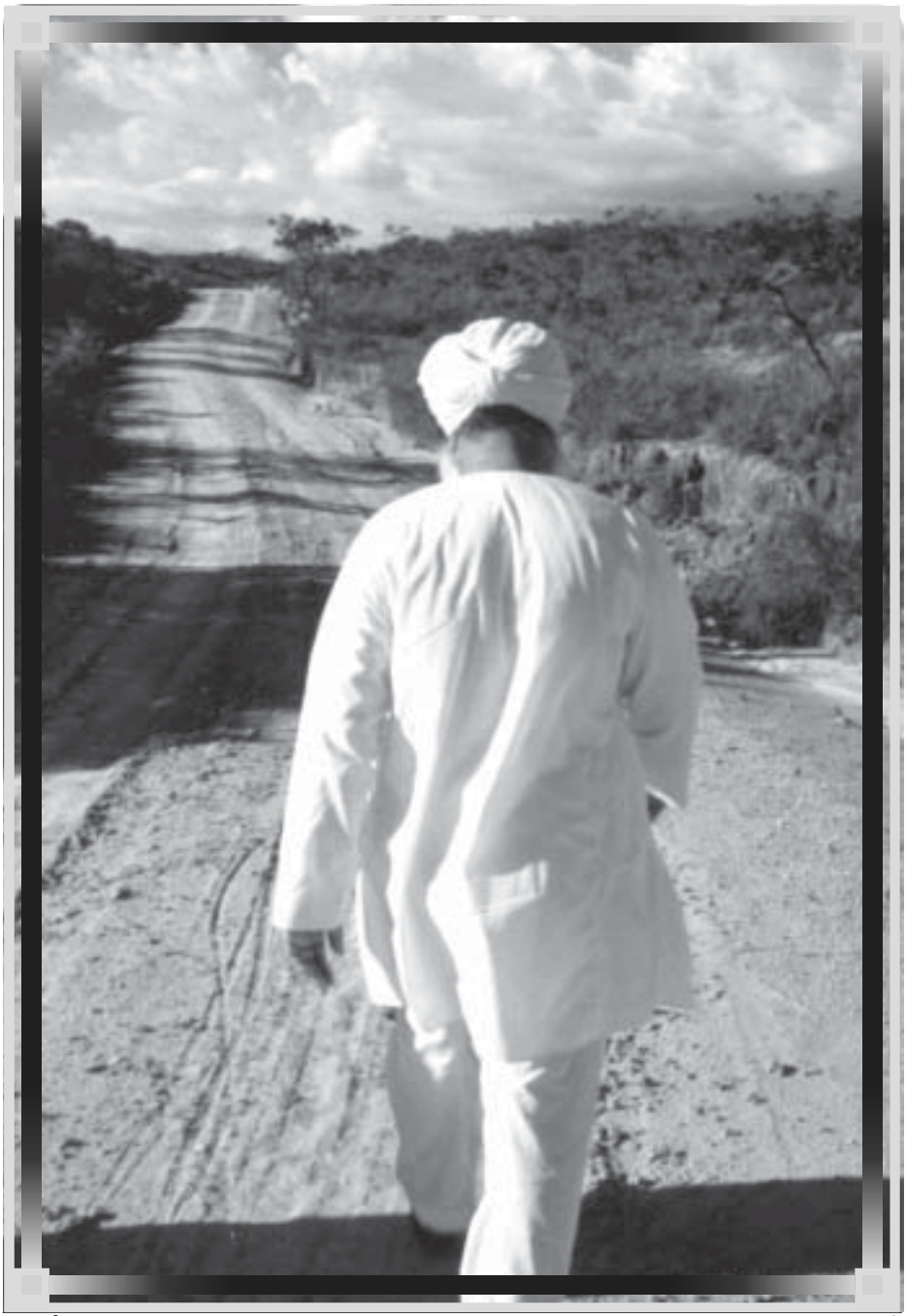

दाता जी कित्थे गयों

दाता जी, कित्थे गयों, प्रीतमा वे, कित्थे गयों, (2)

1. हत्थीं अपणी बाग सजा के, आपे तूं ऐह बूटे[1] ला के, (2)
नहीं सी छड जांणा सानूं, मालिया वे,
कित्थे गयों .....

2. पता जे हुंदा नाल ही जांदे, काहनूं ऐडे दुःखड़े उठांदे, (2)
जे चिर[2] लौणां सी, रखवालिया वे,
कित्थे गयों .....

3. हुण तां डोले जग दा बेड़ा, बन्ने[3] लावे होर हुण केहड़ा, (2)
तेरे बाजों कौंण बचावे, खुशहालिया वे,
कित्थे गयों .....

4. सुण फरियाद 'अजायब' दी आंवीं, आ के दुःखियां दा दर्द मिटावीं, (2)
सोहणा आ के दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे,
कित्थे गयों .....

1. बूटे – पौधे 2. चिर – देर 3. बन्ने – किनारे

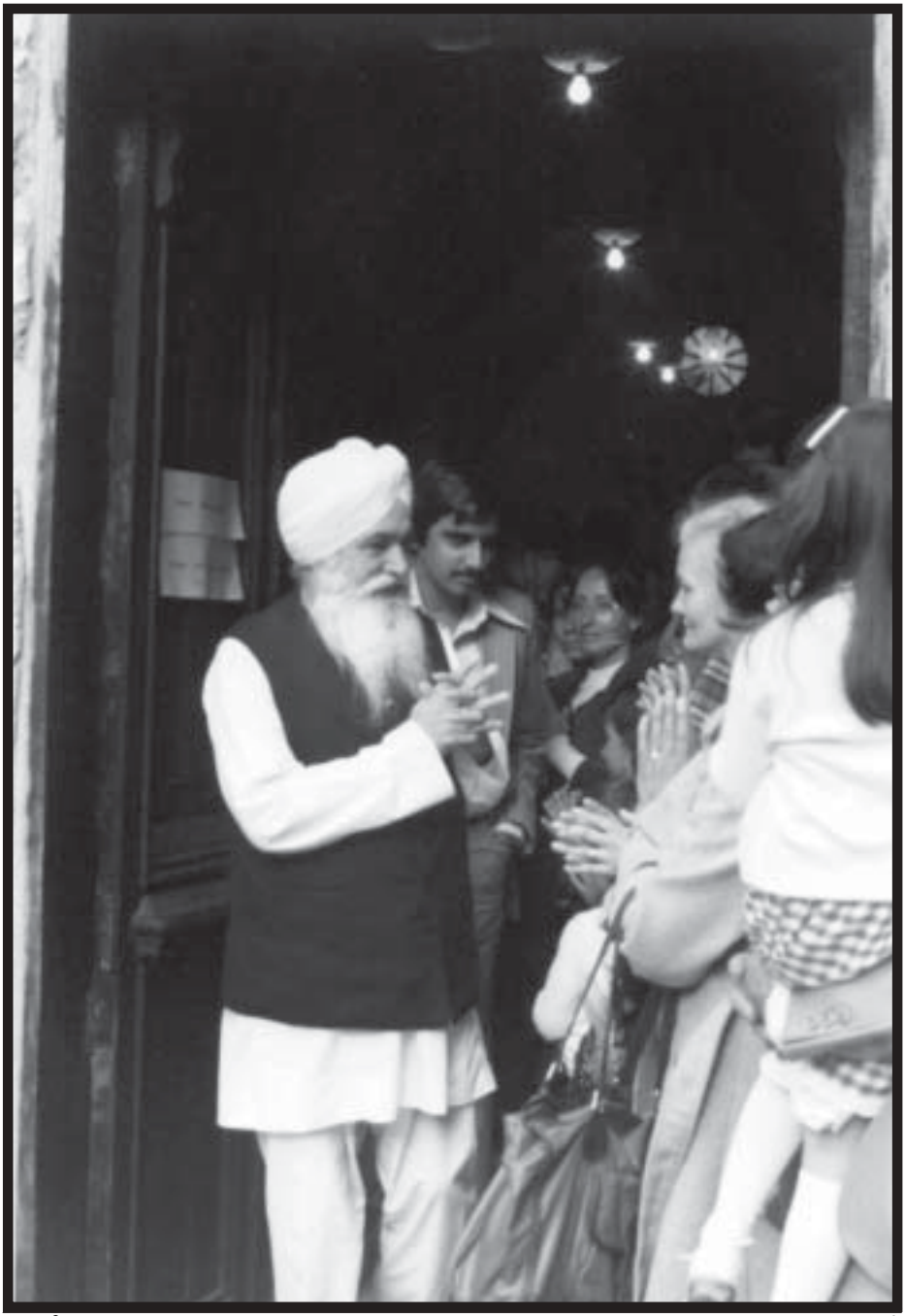

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बिना दरवाजे का घर

वारां - भाई गुरदास जी

हैदराबाद

आपके आगे भाई गुरदास जी की बानी रखी जा रही है। मैंने बैंगलोर में भी भाई गुरदास की बानी पर सतसंग दिए थे। आप बचपन से जिस वातावरण में पले वह गुरु का वातावरण ही था। आपने गुरु-मार्ग पर कठोर मेहनत की और उस पर चलकर सफल हुए; आप गुरु के सच्चे सिक्ख बने। आपने अपने जीवन में कई गद्दियों के बदलाव देखे।

भाई गुरदास बहुत भजन-अभ्यासी थे, आप अंदर के मंडलों में जाया करते थे और पाखंड के खिलाफ थे। आपने सदा अपनी रोजी-रोटी कमाने पर जोर दिया। आप खुद अपनी कमाई से अपना पेट पालते थे। आपका जीवन बेजोड़ उदाहरणों से भरा हुआ है। आपने बहुत सी वारें लिखी जिनमें से यह एक है।

सन्त-महात्मा हमें अंधविश्वास नहीं देते। वे हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़े रखना चाहते हैं क्योंकि संसार में न सदा गुरु का शरीर रहेगा न ही शिष्य का शरीर रहेगा। हमने एक दिन यह संसार छोड़ना है। नाम वह ताकत है जो गुरु में काम करती है और शिष्य को उसी ताकत के साथ जोड़ा जाता हैं।

हम लोग 'नाम' का अभ्यास नहीं करते जब कभी बदलाव आता है और एक के स्थान पर दूसरा गुरु आता है तो हम भ्रमित हो जाते हैं क्योंकि हम अंदर नहीं गए होते। हम अपने आपको कई गुटों व पार्टियों में बाँट लेते हैं, अंदर जाने की बजाय छोटी-छोटी बातों पर झगड़ने लग जाते हैं; रास्ते से भटक जाते हैं।

भाई गुरदास को यह वार लिखने की प्रेरणा उस समय मिली जब गुरु अर्जुनदेव को लाहौर एक शादी में भाग लेने के लिए भेजा गया। आप गुरु के सामने रहकर सेवा नहीं कर सके। आपको आपके पिता गुरु रामदास ने कहा था कि जब तक बुलाया न जाए वापिस नहीं आना। गुरु अर्जुनदेव के बड़े भाई पृथ्वीचंद का संगत की नजरों में बहुत ऊँचा स्थान था। पृथ्वीचंद बहुत सेवा करता था, संगत की अच्छी देखभाल करता था।

जो भी गुरु रामदास जी के दर्शन करने आता वह पहले पृथ्वीचंद से मिलता। पृथ्वीचंद को अपने ओहदे पर मान था। उसमें अहंकार आ गया और वह सोचने लगा कि उसकी सेवा के कारण ही लोग गुरु को जानते हैं और गुरु के पास जाते हैं अन्यथा गुरु क्या चीज़ है? गुरु कौन है? अहंकार अंधा होता है। जिन पर अहंकार सवार हो जाता है वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं? जिनमें अहंकार आ जाता है उनकी अच्छाई भी चली जाती है।

जब गुरु रामदास ने चोला छोड़ा उस समय अर्जुनदेव को गुरु का काम सौंपा गया। आपके बड़े भाई पृथ्वीचंद ने अर्जुनदेव का विरोध किया इसलिए गुरु अर्जुनदेव ने भाई गुरदास को पृथ्वीचंद से मिलने के लिए भेजा ताकि उसे समझा सके कि हमारे सतगुरुओं ने कहा है कि गुरमुख नाम की कणी देकर संसार को तार सकता हैं। यह पूर्ण गुरु के द्वारा ही उत्तराधिकारी के अंदर रखी जाती है, यह गुरु का कार्य है; जिसको यह कार्य दिया जाता है वही इस कार्य को कर सकता है।

नामदान देने का कार्य व गुरु का बनना किसी के हाथ में नहीं है। यह स्वयं गुरु के हाथ में होता है, जिससे भी वह कार्य करवाना चाहता है वही इस कार्य को कर सकता है। जिसके अंदर

'शब्द' प्रकट हो जाता है वही यह कार्य कर सकता है। भाई गुरदास ने पृथ्वीचंद को समझाया कि यह झगड़ने का मार्ग नहीं है। उसे गुरु अर्जुनदेव के खिलाफ कुछ नहीं कहना चाहिए।

भाई गुरदास ने पृथ्वीचंद को प्यार से समझाया कि नाम की दात वही दे सकता है जिसको स्वयं गुरु ने नाम की दौलत बख्शी हो। भाई गुरदास ने गुरु नानकदेव जी के यह वचन कहे, ''अगर गुरु ही कंगाल है तो सेवक कैसे समृद्ध जीवन बिता सकते हैं, वे कैसे सुखी हो सकते हैं, जो स्वयं ज्ञान नहीं रखता वह सेवकों को कैसे ज्ञान दे सकता है? ऐसे गुरु के पीछे लगने वाले अज्ञानी हैं।''

सिक्खों के इतिहास में पृथ्वीचंद को महा ईर्ष्यालु बताया गया है। इसी तरह उसके बेटे मेहरबान ने भी सदा गुरु अर्जुनदेव का विरोध किया और गुरु अर्जुनदेव के बराबर पंथ चलाया। उन्होंने गुरु रामदास की सारी दुनियावी धन-दौलत ले ली और गुरु अर्जुनदेव के लिए कुछ नहीं छोड़ा। गुरु अर्जुनदेव जी के लंगर का खर्च संगत ने चलाया। पृथ्वीचंद ने संगत को कई बार कहा कि अर्जुनदेव के पास मत जाओ अगर तुम अर्जुनदेव के पास जाओगे तो मैं तुम्हारे साथ ठीक से पेश नहीं आऊँगा।

पृथ्वीचंद और उसके बेटे मेहरबान ने गुरु अर्जुनदेव का इतना विरोध किया कि उस समय की हुकूमत ने गुरु अर्जुनदेव को बहुत तकलीफें दी। आप जानते हैं कि गुरु अर्जुनदेव को किस तरह से कष्ट दिए गए। आपको जलते हुए कोयलों पर बिठाया गया, इतने कष्ट दिए गए कि आपको चोला छोड़ना पड़ा।

गुरु अर्जुनदेव जी शान्ति और नम्रता के भंडार थे। आपने पृथ्वीचंद का विरोध नहीं किया। आप सदा उसके प्रति विनम्र, प्रिय और क्षमाशील रहे।

भाई गुरदास जी का मकसद किसी की निन्दा या विरोध करना नहीं था। जिन महात्माओं ने भजन-अभ्यास किया होता है वे किसी की निन्दा नहीं करते, किसी के खिलाफ कुछ नहीं कहते क्योंकि वे जानते हैं कि यह उनके अपने लिए ही अच्छा नहीं है। वे सदा दीन बनकर रहते है। इस लेखनी पर सतसंग देते हुए मेरा मतलब किसी खास आदमी के खिलाफ कुछ कहना नहीं है; आपके सामने सिर्फ सत्य ही पेश किया जाएगा।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सच्चाई खुद को भी नहीं बख्शती और छत पर चढ़कर बोलती है।'' इस बानी में भाई गुरदास बड़े प्यार से उन लोगों के बारे में बताएंगे जो भजन-अभ्यास किए बिना ही आत्माओं को 'नामदान' देने का कार्य करते हैं तो उनके साथ क्या होता है?

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''यह मार्ग पढ़-पढ़ाई और बुद्धि ज्ञान का नहीं है। यह अंदर जाकर सच्चाई को अपनी आँखों से देखने का मार्ग है। पुस्तकें मन और बुद्धि की पैदाईश है; जहाँ मन और बुद्धि समाप्त होते हैं वहाँ से रूहानियत की ए.बी.सी. शुरू होती है।''

हम दुनियावी मसले भी मन और बुद्धि के द्वारा हल नहीं कर सकते। आप कई बार सोचते हैं कि मैं इस बात का हल नहीं जानता जबकि मन और बुद्धि आपके साथ होती है; उनके द्वारा आप अपने मसलों को हल नहीं कर सकते।

गलीं जे सहु पाईऐ तोता किउ फासै।

भाई गुरदास कहते हैं, ''गुरु को खुश करने का तरीका सिर्फ भजन और सिमरन है। गुरु ने आपको सिमरन दिया है

अगर आप यह सोचें कि मैं गुरु से बातें करके या गुरु के आगे-पीछे दौड़कर गुरु को खुश कर लूँगा ऐसा नहीं होता। गुरु भजन-सिमरन करने से ही खुश होता है।''

रसल प्रकिंस ने मानव एकता कांफ्रेंस में एक आदमी के बारे में कहानी सुनाई जिसके दो नौकर थे। एक नौकर तो काम के प्रति बड़ा वफादार था अपनी जिम्मेवारी समझता था। चाहे मालिक हो या न हो वह अपने काम में लगा रहता था लेकिन दूसरा नौकर कोई काम नहीं करता था, वह मालिक के आगे-पीछे भागता रहता था। जब भी मालिक आता वह उससे मीठी-मीठी बातें करके उसको खुश करने में लगा रहता था।

अब आप ही सोचें! मालिक किस पर खुश होगा? जो नौकर काम न करके केवल बातों से ही मालिक को खुश करना चाहता था या उस नौकर से जो मालिक की गैर मौजूदगी में भी अपने काम में दिलोजान से लगा रहता था। हम कह सकते हैं कि जो नौकर मालिक की गैरमौजूदगी में भी जिम्मेवारी निभाता है मालिक उस पर ही खुश होगा। इसी तरह गुरु उन प्रेमियों से खुश होगा जो अपनी जिम्मेवारी समझकर भजन-सिमरन में लगे रहते हैं।

हम दूसरे लोगों को प्रभावित करने के लिए सतगुरु के आगे-पीछे दौड़ते हैं ताकि संगत प्रभावित हो कि हम सच्चे प्रेमी हैं अगर हम सतगुरु के देह रूप में न होने पर उनकी उपस्थिति को महसूस नहीं करते तो हम सतगुरु के सच्चे प्रेमी नहीं हैं।

कई बार हमारी जिंदगी में ऐसी घटनाएं घटती हैं कि सतगुरु देह रूप में हमारे पास न हो फिर भी वह छाया की तरह 'शब्द-रूप' में हमारे अंदर मौजूद रहता है। अगर हम अपनी जिम्मेवारी

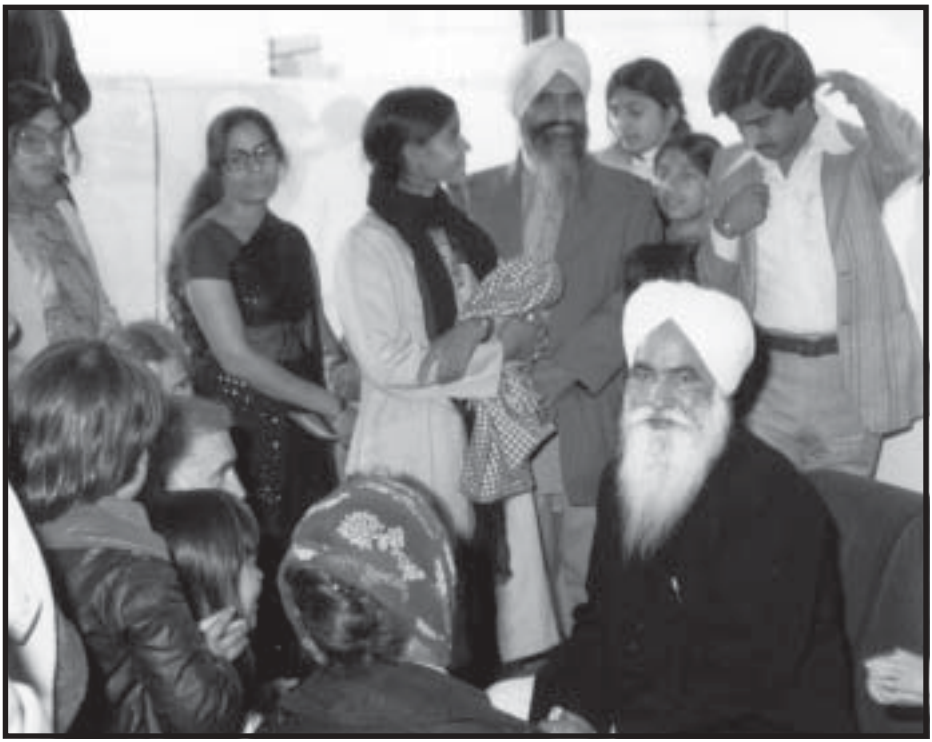

नहीं समझते, भजन-सिमरन नहीं करते और पाप करते हुए नहीं हिचकिचाते तो क्या वह हमसे खुश होगा? अगर हम अपनी जिम्मेवारी निभाते हैं और सतगुरु की गैर मौजूदगी में भी भजन-सिमरन करते हैं तो वह हमसे खुश होगा।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''अगर मीठी-मीठी और प्यारी-प्यारी बातों से मुक्ति मिलती होती तो पिंजरे के तोते को मुक्ति मिल गई होती क्योंकि तोता बहुत मीठा और प्यारा बोलता है लेकिन वह फिर भी पिंजरे में ही रहता है।''

मिलै न बहुतु सिआणपै काउ गूँहु गिरासै।

आप कहते हैं, ''कौआ चंचल, चुस्त और चालाक बन जाए तो भी वह गंदगी के ढ़ेर पर ही बैठता है। चुस्त या चालाक बनने से

परमात्मा मिलता तो फिर कौए को क्यों नहीं मिल जाता? चाहे कौआ चालाक होता है तो भी वह गंदगी पर ही बैठता है।''

जोरावरी न जिपई शीह सहा विणासै।

भाई गुरदास कहते हैं, '' चाहे हम ताकतवर हो, हमारे साथ ताकतवर लोग भी हों तो भी हम ताकत से परमात्मा को नहीं पा सकते। अगर परमात्मा ताकत से मिलता होता तो इस संसार मे बहुत से ताकतवर जानवर हैं उन्हें परमात्मा मिल गया होता।''

आप खरगोश और शेर का उदाहरण देते हैं कि एक शेर जंगल के बहुत से जानवरों को मारा करता था। एक बार जंगल के सारे जानवर इकट्ठे होकर शेर के पास गए और उन्होंने कहा, ''आप इस तरह जानवरों को मत मारें; हम आपकी भूख मिटाने के लिए रोजाना एक जानवर भेज दिया करेंगे।'' शेर इस बात पर राजी हो गया। वे रोज एक जानवर शेर के पास भेज दिया करते थे।

कुछ समय तक इसी तरह चलता रहा। जिस दिन खरगोश की बारी आई तो वह थोड़ी देर से शेर के पास पहुँचा। शेर उस पर बहुत नाराज हुआ क्योंकि वह भूखा था। शेर खरगोश को देखकर चिल्लाया, ''ओ छोटू! तुम देर से क्यों आए हो, क्या तुम नहीं जानते कि मैं भूखा हूँ?'' खरगोश ने कहा,''हे मालिक! आपके राज्य में एक और शेर है वह आपसे अधिक ताकतवर है। जब मैं आपके पास आ रहा था उसने मुझे पकड़ लिया। मैं बहुत सावधानी से बचकर आपके पास आया हूँ। आप भी उस शेर से सावधान रहें क्योंकि वह आपसे अधिक ताकतवर है, आपको कुछ करना चाहिए।''

शेर अपने अहंकार में मतवाला था, उसे अपनी ताकत पर घमंड था। वह दूसरे ताकतवर शेर को जंगल में कैसे सहन कर सकता था? इसलिए उसने कहा, ''अच्छा! वह शेर कहाँ है? मैं

चलकर उसे देखता हूँ।'' खरगोश ने कहा, ''आप मेरे साथ आएं वह एक बहुत बड़े कुएं में रहता है, आप उसे देख सकते हैं उसकी आवाज आपसे भी तेज है।''

खरगोश शेर को कुएं के पास ले गया और कहा, ''आप नीचे देखें वह पानी में है।'' पानी शांत था इसलिए शेर को अपनी परछाई अच्छी तरह से दिखाई दी। शेर अहंकार में पागल हो गया और भूल गया कि वह अपनी ही परछाई देख रहा है। शेर ने अपनी ही परछाई देखकर कहा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो? आवाज की गूंज कुएं में से वापिस आई जो उसी बात को दोहरा रही थी; शेर फिर जोर से गरजा। उसे गरजने की आवाज सुनाई दी तो उसने सोचा कि यह शेर मुझसे ज्यादा ताकतवर है मुझे मार डालेगा। वह उसे मारने के लिए कुएं में कूद गया और खुद मर गया। वास्तव में वहाँ कोई शेर नहीं था। उसने सोचा कि मैं अपनी ताकत से जंगल में राज्य करता रहूँगा अगर ताकत से कुछ प्राप्त होता तो वह शेर आसानी से प्राप्त कर सकता था।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''अगर लोगों की ताकत का सहारा लेकर परमात्मा मिलता तो इस संसार में बहुत से ताकतवर लोग हो चुके हैं लेकिन उन्हें परमात्मा नहीं मिला, अगर हम नम्र रहें और भजन-अभ्यास करें तो परमात्मा खुश होता है और हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।''

अब भाई गुरदास जी हमें समझाते हैं कि परमात्मा बातों से नहीं मिलता। आपने हमें तोते और कौवे का उदाहरण देकर समझाया कि परमात्मा चतुराई से नहीं मिलता। फिर शेर का उदाहरण देकर समझाया कि परमात्मा ताकत और शक्ति से भी नहीं मिलता। जपजी साहब में गुरु नानक साहब कहते हैं:

सोचै सोचि न होवइ जो सोचे लख वार।

कोई भी ताकत, शक्ति और बातों से परमात्मा को नहीं पा सकता, परमात्मा अंदर जाकर ही प्राप्त होता है।

गीत कवितु न भिजई भट भेख उदासै।

परमात्मा बहुत सी किताबें लिखने से, कविताएं लिखने से और गीत गाने से नहीं मिलता अगर किताबें और कविताएं लिखने से परमात्मा मिलता तो पंडित, भट्ट, विद्वान, लेखक निराश न होते। वे परमात्मा को प्राप्त कर लेते, दर-दर भीख मांगते न फिरते। जिनके खुद के घर में आग लगी हो वे दूसरों के घर को कैसे बचा सकते हैं? कबीर साहब कहते हैंः

धृग तिन्हाँ दा जीवणां जे लिख लिख वेचे नांव।

जोबन रूपु न मोहीऐ रंगु कुसुंभ दुरासै।

आप कहते हैं कि खूबसूरत मुख या रंग रूप से परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता अगर परमात्मा खूबसूरती से प्राप्त होता तो कुसुंभ फूल उसे प्राप्त कर लेता। कुसुंभ फूल जब खिलता है तो सबसे खूबसूरत दिखाई देता है लेकिन इसकी खूबसूरती एक क्षण से ज्यादा नहीं रहती, यह फूल थोड़ी देर में ही मुरझा जाता है।

विणु सेवा दोहागली पिरु मिलै न हासै।।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''शब्द-नाम की कमाई के बिना और गुरु की आज्ञा का पालन किए बिना गुरु को खुश नहीं किया जा सकता। वह बाहरी बातचीत और बाहरी प्रभावो से खुश नहीं होता। जब हम अपना काम करें, भजन-सिमरन की कमाई करें और गुरु के हुक्म का पालन करें वह तभी खुश होता है।''

सिर तलवाए पाईऐ चमगिदड़ जूहै।

जिस समय आपने यह बानी लिखी उस समय बहुत से लोग हठ योग करके परमात्मा को पाना चाहते थे, थोड़े से लोग ही गुरुओं के पास जाते थे। अगर हम गुरु के पास जाए बिना परमात्मा की भक्ति करेंगे तो कभी भी परमात्मा को पाने में सफल नहीं हो सकते अगर हम परमात्मा की सच्ची भक्ति करना चाहते हैं तो हमें गुरु के पास जाना पड़ेगा। नाम की दौलत गुरु के पास है। नाम ही परमपिता परमात्मा का जीवन है। नाम गुरु द्वारा ही रखा जाता है। जब तक हम नाम से नहीं जुड़ते सच्ची भक्ति नहीं कर सकते।

आप भारत के कई गाँवो में देख सकते हैं कि कई लोग अपने शरीर को इधर-उधर, ऊपर-नीचे लटकाकर लोगों को प्रभावित करते हैं। लोग सोचते हैं कि ये बहुत तकलीफ उठाते हैं मेहनत करते हैं इन्होंने काफी त्याग किया है इसलिए हमें इन्हें कुछ देना चाहिए, ये लोगों से अनाज आदि चीज़ें मांगते हैं।

भाई गुरदास कहते हैं अगर शरीर को ऊपर-नीचे लटकाने से परमात्मा मिलता होता तो चमगादड़ो को मिल जाता, चमगादड़ सदा उल्टे लटके रहते हैं। वे इन लोगों से ज्यादा तकलीफ उठाते हैं अगर शरीर को ऊपर-नीचे लटकाने से परमात्मा मिलता होता तो उन चमगादड़ो को परमात्मा पहले ही मिल गया होता।

मड़ी मसाणी जे मिलै विचि खुडाँ चूहै।

भारत में ज्यादातर देखने को मिलता है कि बहुत से पाखंडी श्मशानों में रहने लग जाते हैं और वे कहते हैं कि वे मुर्दों से बात कर सकते हैं, उन्होंने भूतों, प्रेतात्माओं को अपने वश में कर रखा है। बहुत से लोग उनको मानने लग जाते हैं। भाई गुरदास पाखंड को खोलकर ब्यान करते हैं अगर श्मशान भूमि में रहने से

परमात्मा मिलता तो जो चूहे और अन्य जीव वहाँ रहते हैं उन्हें परमात्मा आसानी से मिल गया होता क्योंकि वे तो वहीं रहते हैं।

मिलै न वडी आरजा बिसीअरु विहु लूहै।

योगी सारी जिंदगी अपनी उम्र बढ़ाने के लिए तप करते हैं अगर उम्र बढ़ाने से परमात्मा मिलता होता तो परमात्मा सांप को मिल जाता। साँप की उम्र लम्बी और तकलीफ भरी होती है उसके शरीर में जहर की तपिश होती है अगर लम्बी उम्र से परमात्मा मिलता तो सांप परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा से मिल जाता।

होइ कुचीलु वरतीऐ खर सूर भसूहे।

कुछ लोग सोचते हैं कि गंदा रहने से वे परमात्मा को पा सकते हैं। ऐसे लोग कुत्तों को भी अपने से दूर नहीं भगाते, वे उसी थाली में उनके साथ खाते हैं। वे जहाँ खाते हैं वहीं शौच करते हैं। भाई गुरदास इस पंथ को बुरा कहते हैं अगर गंदा रहने से परमात्मा मिलता तो परमात्मा सूअरों को मिल गया होता।

कंद मूल चितु लाईऐ अईअड़ वणु धूहे।

कई ऐसे महात्मा हुए हैं जो नियमित भोजन छोड़कर सब्जियों और कंदमूल पर ही निर्भर रहते हैं, वे कोई अन्य भोजन नहीं करते। भाई गुरदास कहते हैं अगर नियमित भोजन को छोड़कर कोई परमात्मा को प्राप्त कर सकता तो भेड़-बकरियाँ घास के सिवाय कुछ नहीं खाती उनको परमात्मा मिल गया होता।

विणु गुर मुकति न होवई जिउँ घरु विणु बूहे।।

भाई गुरदास के कहने का अर्थ यह है कि कई बार सतसंगी भी ऐसे अंधविश्वासों व कर्मकांडो में पड़ जाते हैं। आखिर में परमात्मा की भक्ति, भजन-सिमरन और ध्यान के सिवाय सब

कुछ बेकार हैं क्योंकि हम पूर्ण नाम पूर्ण सतगुरु से ही प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण सतगुरु ही हमें नाम के साथ जोड़ सकता है।

आप कहते हैं अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं करते और दूसरे कामों में लग जाते हैं तो यह इस तरह है जैसे एक **बिना दरवाजे का घर** हो हम इसमें कैसे प्रवेश करेंगे, हम इस सुंदर घर का फायदा किस तरह उठाएंगे? अगर आप 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं कर रहे हैं तो यह ऐसे है जैसे हम बहुत बड़ा, बहुत सुंदर **बिना दरवाजे का घर** बना रहे हैं। हम सारे रीति-रिवाज कर रहे हैं अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं कर रहे हैं तो जो कुछ हम कर रहे हैं वह हमारे किसी काम का नहीं है।

मिलै जि तीरथि नातिआँ डडाँ जल वासी।

अब भाई गुरदास जी कहते हैं कि मुक्ति न किसी तप से न किसी दूसरे रीति-रिवाज से और न किसी विशेष पवित्र तीर्थ स्थान पर स्नान करने से मिल सकती है। मुक्ति केवल 'शब्द-नाम' की कमाई से ही मिल सकती है।

मैं अक्सर सतसंगों में बताया करता हूँ कि मैंने कई किस्म के तप, जलधारा और ऐसा बहुत कुछ किया है लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला। भाई गुरदास जी भी कहते हैं कि तप करने, बाहरी कर्मकांड करने और पवित्र जल में स्नान करने से आप मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते अगर साल में एक बार पवित्र जल में स्नान करने से मुक्ति मिल जाती तो मछली, मेंढ़क, कछुआ आदि दूसरे जीवों को भी मिल गई होती क्योंकि वे तो सदा पानी में ही रहते हैं।

अभी भी हिन्दुस्तान के लोग गंगा नदी के पवित्र पानी में एक बार नहाने से मुक्ति समझते हैं। कबीर साहब के समय में भी

लोगों को विश्वास था कि गंगा में नहाने से मुक्ति की गारंटी है लेकिन कबीर साहब ने इस बात को नकारा और कहाः

गंगा तीर जे घर करे, पीवे निरमल नीर।
बिनु हर भजु मुक्ति होवै यो कथ रहे कबीर।।

वाल बधाइआँ पाईऐ बड़ जटाँ पलासी।

आपने भी देखा होगा कि कुछ लोग लम्बी-लम्बी जटाएं बढ़ा लेते हैं वे सोचते हैं कि ऐसा करके वे परमात्मा की भक्ति करते हैं और मुक्त हो जाएंगे लेकिन भाई गुरदास ऐसे लोगों को कोई महत्त्व नहीं देते। आप कहते हैं अगर जटा बढ़ाने से परमात्मा मिलता होता तो पेड़ की लंबी-लंबी जटाएं धरती को छू रही होती है तो पेड़ को मुक्ति मिल गई होती।

कबीर साहब कहते हैं चाहे आप जटाएं बढ़ा लें या बालों को साफ करवा लें, ये सब आप मन के कहने पर करते हैं इसलिए चाहे आप बाल साफ करवाए या जटाधारी हों, यह सब बेकार है।

नंगे रहिआँ जे मिलै वणि मिरग उदासी।

भाई गुरदास हिन्दुस्तान के एक विशेष धड़े की बात करते हैं कि ये लोग नंगे रहते हैं, जूते भी नहीं पहनते। ऐसे लोग कहते हैं कि उन्होंने ऐसा बारह वर्षों तक किया और वे बारह वर्षों तक ऐसा और करेंगे क्योंकि उनको ऐसा करने को कहा गया है। भाई गुरदास जी ऐसी भक्ति को कोई महत्त्व नहीं देते क्योंकि यह सब बेकार है। अगर नंगे रहने से और नंगे पैर चलने से परमात्मा मिलता तो हिरण सदा जंगल में नंगा ही रहता है कोई उसके लिए जूते नहीं बनाता फिर हिरण को मुक्ति मिल गई होती।

भसम लाइ जे पाईऐ खरु खेह निवासी।

जे पाईऐ चुप कीतिआँ पसूआँ जड़ हासी।
विणु गुर मुकति न होवई गुर मिलै खलासी।।

अब भाई गुरदास जी उन साधुओं और महात्माओं के बारे में बताते हैं जो सदा मौन धारण किए रहते हैं अगर उन्हें कोई चीज़ चाहिए तो वे कागज पर लिखकर मांगते हैं। मैं खुद भी ऐसे मौनियों के पास गया हूँ अगर मौन धारण करने से परमात्मा मिलता होता तो फिर जानवरों ने क्या गलती की थी? अगर मौन धारण करने से परमात्मा मिलता तो बेचारे जानवर मुक्ति प्राप्त कर लेते।

भाई गुरदास अपना जातिय तजुर्बा ब्यान कर रहे हैं कि गुरु के बिना कोई भक्ति नहीं कर सकता, केवल सतगुरु को प्राप्त करके ही हम मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

भाई गुरदास जी इस वार में बता रहे हैं कि हम सतसंगी लोग सोचते हैं कि ऐसी चीज़ें हमारे भजन में मदद करेंगी या हमें परमात्मा के पास ले जाएंगी। आप ब्यान करते हैं कि ऐसा करके आप परमात्मा के निकट नहीं आ सकते, भक्ति नहीं कर सकते।

'शब्द-नाम' की कमाई किए बिना गुरु का हुक्म माने बिना और गुरु की हिदायतों को माने बिना हम मुक्ति नहीं पा सकते। अक्सर ऐसा होता है कि गुरु हमारे अंदर से एक भ्रम निकालता है तो हम सैंकड़ो भ्रम डालकर अंधविश्वास में पड़ जाते हैं।

आखिर में भाई गुरदास जी प्यार से बताते हैं कि सतगुरुओं ने कहा है कि हम भ्रम और अंधविश्वास से ऊपर उठकर सतगुरुओं के कहे अनुसार चलें। सतगुरुओं ने हमें 'नाम' का रास्ता दिया है। हमें इस वक्त का फायदा उठाना चाहिए, 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

तमाशा

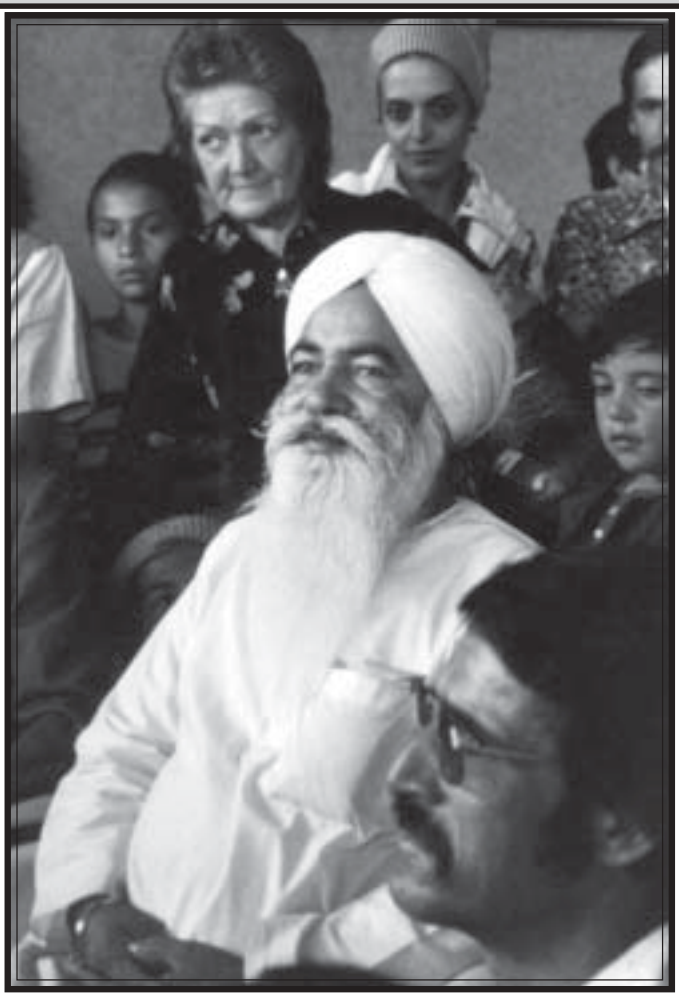

परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हम जीवों पर बहुत भारी दया की। आपने हमारी आत्मा पर रहम करने के लिए शान्ति और सुख का देश छोड़ा। आप परमात्मा की तरफ से भेजे हुए इस दुखों, बिमारियों और परेशानियों की नगरी

में आए। आप जिस घर से आए आपने हमें उस घर का निमंत्रण दिया और बताया कि आपका घर कितना रोशन है वहाँ कितना कीर्तन है और कितनी शान्ति है। आपने हमें वह प्रकाश भी दिखाया और वह कीर्तन भी सुनाया।

अब हमारा फर्ज है कि हम उस प्रकाश को उस कीर्तन को आगे बढ़ाएं क्योकि शिष्य की भी कुछ जिम्मेवारियां होती हैं; जो उसे अवश्य निभानी पड़ती हैं। गुरु कभी भी अपनी ड्यूटी से लापरवाह नहीं होता। जब से दुनियां बनी है उसने आत्मा के साथ जो वायदा किया होता है वह उस पर खरा उतरता आया है।

गुरु गोबिन्द सिंह जी कहते हैं कि मैंने अपने पूर्वले जन्म में बहुत भारी तपस्या की और मैं दो से एक रूप हो गया। मैं परमात्मा में मिल गया था लेकिन परमात्मा ने फिर हुक्म दिया कि तूने संसार में जाकर मेरा यह कार्य करना है। तूने जीवों को मेरे साथ जोड़ना है। मैंने संसार में बहुत सारे ऋषि-मुनि भेजे हैं लेकिन उन्होंने अपने-अपने पंथ चला लिए, वे परमात्मा के शरीक बनकर बैठ गए। तू संसार में जाकर जीवों को मेरे साथ जोड़।

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा, ''मैं परमात्मा का हुक्म टाल नहीं सका लेकिन मेरी सुरत परमात्मा के चरणों में लगी रही। परमात्मा ने मुझे संसार में अपना बेटा बनाकर भेजा। मैंने विनती की कि संसार में आपने मेरी रक्षा करनी है, आपने ही मेरे सिर पर हाथ रखना है।'' परमात्मा ने कहाः

मैं अपना सुत तुझे नवाजा।

मैंने तुझे अपना बेटा बनाया है। मैं पिता की तरह तेरी सारी जरूरतें पूरी करूंगा। गुरु गोबिन्द सिंह ने कहाः

ठाड़ पयो मैं जोड़कर वचन कहयो सिर न्याई।
पंथ चले तब जगत में जब तुम करो सहाई।

मैंने परमात्मा के आगे दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करके कहा कि 'शब्द-नाम' का रास्ता आपकी मदद के बिना नहीं चलेगा। मुझे परमात्मा का जो हुक्म था मैंने संसार में आकर वही किया। मेरी किसी के साथ दुश्मनी नहीं सब आत्माओं के साथ प्यार है। आप कहते हैं:

मैं हूँ परम पुरुष का दासा देखन आयो जगत तमाशा।

सब सन्त इस संसार को **तमाशा** समझते हैं। हमारी यह हालत है कि हम दुःख आने पर रोते हैं और सुख आने पर फूले नहीं समाते। कोई अपने कर्मों को कोसता है कोई परमात्मा में नुख्स निकालता है। हम गुरु गोबिन्द सिंह का इतिहास पढ़ते हैं कि उस वक्त की हुकूमत ने आपको बहुत कष्ट दिए। आपके चार बच्चे शहीद कर दिए लेकिन आपने इस जगत को **तमाशा** ही समझा।

हम नाटक देखने जाते हैं उसमें बहुत सी अच्छी-बुरी कलाबाजियाँ देखते हैं, जिसका हमारे ऊपर कोई बुरा असर नहीं होता। इसी तरह जब हमारी आत्मा स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे को उतारकर पारब्रह्म में जाती है इसके आगे हमारा सतगुरु दया करके हमें सच्चखंड ले जाता है तो हमें यह दुनियां एक **तमाशा** दिखाई देती है। परमात्मा कृपाल भी उसी घर में से आए आपने भी संसार को एक **तमाशा** ही समझा।

परम पिता परमात्मा कृपाल मेरे जिम्में जो ड्यूटी लगाकर गए हैं मैं कई दिनों से उसके मुत्तलिक आपको समझा रहा हूँ अगर हम मन के बताए हुए रास्ते पर चलेंगे तो मन हमें एक कठपुतली की तरह नचाएगा।

जब कभी आठ दिन का कार्यक्रम होता है तो पश्चिम के प्रेमी अभ्यास के अच्छे तजुर्बे बताते हैं, जिसे सुनकर दिल बहुत खुश हो जाता है कि कुछ प्रेमियों ने इस कार्यक्रम से फायदा उठाया है। हमारे हिन्दुस्तान के प्रेमी भी मुझे अपने अच्छे तजुर्बे बताते हैं, दिल खुश हो जाता है क्योंकि सारे प्रेमी बनिए की तरह धोती झाड़कर नहीं जाते। बहुत से प्रेमी कुछ पल्ले बाँधकर भी ले जाते हैं।

परमात्मा ने अपार दया करके हमारी आत्मा पर रहम करने के लिए महाराज कृपाल को भेजा। आपने आकर हमें अपने नाम की महानता बताई। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सन्त कृपाल कृपा जे करे नानक सन्त संग निंदक भी तरे।

हमें अपने पिछले जन्मों का तो पता नहीं कि हम पिछले जन्मों में कितनी निन्दा और कितने भोग भोगकर आए हैं अगर हम इस जन्म का भी लेखा-जोखा करें तो हम नाम के, कृपा के काबिल नहीं हो सकते। यह तो आपने अपने नाम की महानता बताने की खातिर हम निन्दा करने वाले, बुरे कर्म करने वाले और अपराधियों के घर-घर जाकर अपने पास बुलाया।

जैसे एक पिता बच्चे को अपनी अंगुली पकड़वाता है उसे खिलाता है और कभी उसे मिठाई देकर चुप करवाता है कभी उसके साथ प्यार करता है। इसी तरह उसने हमारे साथ लाड लड़ाए कि प्यारेयो! अगर तुम मेरे प्यार को समझोगे उसकी कद्र करोगे तो जरूर 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाकर मेरे पास आओगे।

मैंने सुबह भजन में बताया था कि परमात्मा पर्वत जितना विशाल है। हम रूहानियत में अंधे थे आपने हमें आँखें दी। हम

पिंगले थे सच्चखंड तक नहीं पहुँच सकते थे। हम जब तक सतगुरु की दया प्राप्त नहीं करते वे हम पिंगलों को पैर नहीं देते तब तक हम चढ़ाई नहीं कर सकते। उन्होंने हम पिंगलों को पैर दिए और आत्मा को हरा-भरा करने वाला 'नाम' का अमृत भी दिया।

प्यारेयो! मैं आपको आठ दिन से समझाता आ रहा हूँ कि आप महाराज कृपाल का यह संदेश याद रखें, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हजार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठें। जब तक आप आत्मा को खुराक न दे लें तब तक तन को खुराक न दें। तन की खुराक अन्न है हम कहते हैं अगर हम अन्न नहीं खाएंगे तो बचेंगे नहीं। आत्मा की खुराक इससे भी ज्यादा जरूरी है क्योंकि हमारी आत्मा जन्म-जन्मांतरों से कमजोर है।''

आत्मविश्वास न होने की वजह से ही हम पल-पल डोलते हैं। अगर भजन-सिमरन करके आत्मा को खुराक दी हो तो हमारे अंदर आत्म-विश्वास जाग जाता है हमारे अंदर वह बुद्धि पैदा हो जाती है जिसे सन्त-महात्मा विवेक-बुद्धि कहते हैं। विवेक का मतलब सच और झूठ का निर्णय करना है।

मुझे आपके साथ आठ दिन अभ्यास करके और अपने गुरु का संदेश सुनाकर बहुत खुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने घर के कारोबार करते हुए अपने देश अपने घर में जाकर इस संदेश का पालन करेंगे। परमात्मा कृपाल हमें जो अपना प्यार देकर गए हैं उसे भजन करके ही बनाकर रखेंगे। हमारा फर्ज बनता है कि हम उनके उपदेश पर चलकर अपने जीवन को सुधारें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *आपने अपने भजनों में कभी खुद को दुखी, कभी गरीब अजायब कहकर ब्यान किया है। क्या किसी सन्त-महात्मा को खुद के लिए ऐसा कहना ठीक है जबकि ऐसी हालत तो हम इंसानों की होती है?*

बाबा जी: आप किसी भी पहुँचे हुए महात्मा के लिखे शब्द पढ़कर देखें उनमें नम्रता टपकती है। वे अपने आपको दास, दुखिया, गरीब ही ब्यान करते हैं। महात्मा जानता है कि मेरी ज़िंदगी को बनाने वाला मेरा गुरु है। मेरा गुरु सच्चा-सुच्चा है और उसने मुझे सच्चा-सुच्चा बनाया है। वह अपने आपको क्रेडिट नहीं देता वह तो अपने आपको भूलकर अपने गुरु को ही बड़ाई देता है। कबीर साहब कहते हैं:

बुरा देखन मैं गया बुरा न मिलया कोए।
जब देखया दिल आपना मुझसे बुरा न कोए।

इसका मतलब यह नहीं कि कबीर साहब बुरे थे। आप परम सन्त कुलमालिक थे। इसमें आपकी नम्रता टपकती है। सन्त सच्चखण्ड में पहुँचकर भी दम नहीं मारते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक गरीब ढह पया द्वारे हर मेल लेयो वडयाई।

भाई गुरुदास जी बड़ी कमाई वाले थे। आप कहते हैं:

हों अपराधी गुनहागार हों बेमुख मंदा।

ऐसा नहीं की आप बेमुख या मंदे थे। इसमें उनके प्यार और सच्चाई की झलक दिखती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु मैं गुनाहगार अति भारी।

सन्तों ने अंदर जाकर गुरु की शान को देखा होता है। गुरु ही हमें उस निर्मल पवित्र देश में लेकर जाता है। हमारी आत्मा यहाँ विषय-विकारों से भरे हुए मातलोक में उतरी हुई है। अगर कोई कोयला हाथ में पकड़कर यह कहे कि मेरे हाथ काले नहीं होंगे तो सवाल ही पैदा नहीं होता हाथों में कालिख जरूर लगेगी।

हमारे पास गुरु का धन्यवाद करने का और कोई जरिया नहीं। ऐसे विषय-विकारों के जंगल में से ले जाने में गुरु की ही बड़ाई है। हमारी आत्मा से अपने आप ही आवाज निकल पड़ती है कि तू सच्चा-सुच्चा है; मैं गरीब हूँ। गुरु ने ही हमें नाम का धन दिया होता है अगर गुरु हमें नाम का धन न दे तो हम कंगाल है।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि सारी दुनियां रोगी है नाम दारू है। नाम प्राप्त किए बिना हम मैल से भरे हुए हैं। नाम सतगुरु ने प्रकट किया होता है, सतगुरु हमें उसी नाम के साथ जोड़ता है।

अगर हम जंगल में रास्ता भूल जाएं वहाँ कोई अपना नहीं होता। वहाँ जो भी मिलता है अपने स्वार्थ के लिए ही मिलता है लेकिन हमारी रक्षा करने वाला कोई नहीं होता। वहाँ हम इधर-उधर घूमते हैं हमें हर तरफ से डर लगता है अगर उस जगह हमें कोई अपना मिल जाए वह हमारी मदद करे या सहारा दे और उसका कोई मोल भी न ले तो हम उसका क्या धन्यवाद करेंगे?

इसी तरह यह दुनियां भी एक जंगल है, हम इसमें भटक रहे हैं। यहाँ पर हमारा अपना कोई नहीं होता। माता बच्चे से प्यार करती है कि बेटा बुढ़ापे में मेरा सहारा बनेगा। बच्चा माँ से प्यार करता है कि यह मुझे पालेगी, दूध पिलाएगी, पढ़ाई-लिखाई

करवाएगी। औरत पति से प्यार करती है कि पति उसकी जरूरतें पूरी करेगा और पति भी पत्नी से गरज का ही प्यार करता है। यहाँ पर किसी को सुख का साँस नहीं। गुरु का प्यार ही बेगरज है, इस दुनियां में केवल गुरु ही अपना है। कबीर साहब कहते हैंः

दिल का महरम कोई न मिलया जो मिलया सो गरजी।

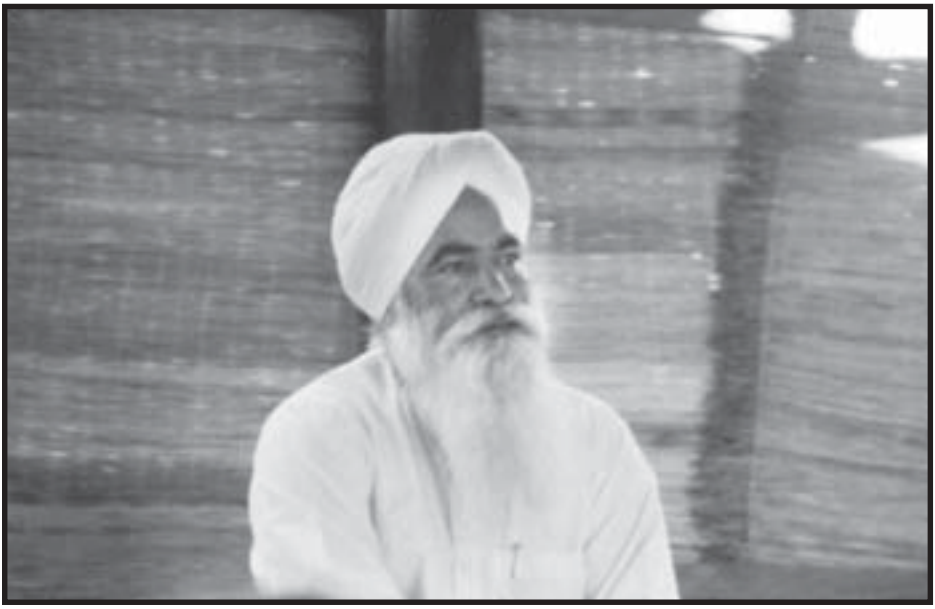

गुरु सेवक से भजन-सिमरन के सिवाए कोई आशा नहीं रखता। हम उसका यही धन्यवाद कर सकते हैं कि हम इस संसार में भटक रहे थे हमारी तो कोई बात ही नहीं पूछता था लेकिन तूने ही हमारी बाजू पकड़ी, तूने ही हमें संसार में से निकाला। आत्मा से अपने आप ही ऐसी आवाज निकलती है कि मैं तो ऐसा ही था, तू सच्चखण्ड का वासी है तूने मेरे ऊपर रहमत की।

कबीर साहब कहते हैं, ''गुरु का असली चढ़ावा सतनाम है। हमारे दिल में हमेशा यह प्यार लगा रहा कि हम गुरु को क्या

अर्पित करें? गुरु पर अपना आप न्यौछावर करना ही गुरु का चढ़ावा है। गुरु हमसे किसी भी वस्तु की आशा नहीं रखता। वह अपने खर्चे के लिए सेवक की सुई तक लेकर भी खुश नहीं होता। गुरु तो सेवक से भजन-सिमरन करवाकर ही खुश होता है।''

सब सन्त यही कहते हैं कि भजन-सिमरन करके लाएं। मैंने आज तक किसी की निन्दा-आलोचना नहीं की, न ही अपने सेवकों को यह उपदेश दिया है क्योंकि किसी की निन्दा करना अपने भजन को खराब करना और अपनी आत्मा को दागी करना है।

मैं हिन्दुस्तान के बहुत समाजों में प्यार, श्रद्धा और भरोसा लेकर गया हूँ लेकिन सब जगह थ्योरी समझा रहे थे, जुबानी जमा खर्च ही था। बाबा बिशनदास ने थोड़ा बहुत रास्ता चलाया और महाराज सावन सिंह जी ने आशा बंधवाई की समय आने पर सेवा ली जाएगी। मैं आज भी बाबा बिशनदास जी का धन्यवाद करता हूँ क्योंकि आपने मेरी जिन्दगी की नींव डाली। बाबा बिशनदास का 'दो-शब्द' का भेद प्रेक्टिकल था। आपने मुझे 'दो-शब्द' का भेद दिया। केवल मैं ही आपका शिष्य था और आपने कोई भी चेला नहीं बनाया। आप यही कहते थे, ''जब मेरे पास ही पूरा रास्ता नहीं तो मैं और किसी को चेला क्यों बनाऊँ?''

मैं जब बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन सिंह के पास लेकर गया तो वहाँ बातों-बातों में एक मुसलमान फकीर ने महाराज सावन से कहा, '' आप एक जन्म में फरीदकोट के बादशाह थे।'' उस समय फरीटकोट स्टेट पंजाब में थी। महाराज सावन ने कहा, ''हाँ! मैंने कई जन्मों में बड़ी गरीबी भी देखी है।''

जो महात्मा अंदर परमात्मा से मिल जाते हैं उन्हें अनेकों जन्मों का ज्ञान होता है। उन्हें पता होता है कि उन्होंने कितने

जामों में गरीबी देखी और कितने जामों में अमीरी देखी। कितनी पत्नियाँ बनाई, कितनों के पति और कितनों के बच्चे बने लेकिन हमेशा ही भरे बाजार को छोड़ते गए और आगे बनाते गए।

आज तक किसी ने साथ नहीं दिया। अब जिसने हमें इस कष्ट में से निकाला और सच्चखण्ड के नाम का धन दिया जो जिन्दगी की रोजी रोटी है। इस नाम को प्राप्त करके हमें न जन्म-मरण का दुख है न ही इस धन के जाने का दुख है क्योंकि इस नाम के धन को चोर चुरा नहीं सकता, पानी डुबो नहीं सकता, हवा उड़ा नहीं सकती; यह अखुट-धन है। हम गुरु का धन्यवाद कैसे कर सकते हैं जिसने हमें इतनी ऊँची दौलत दी है।

अगर आप अजायब की आँखों से या अजायब की आत्मा से देखें तो पता नहीं हमने पिछले जन्मों में कितने कष्ट सहे होंगे। अगर इस जामें के कष्ट भी ब्यान करे तो वह कम नहीं। अगर हम यह मान लें तो कृपाल का धन्यवाद कैसे कर सकते हैं?

कन्त पकड़ हौं कीन्हीं रानी।

कृपाल ने एक रूलती-फिरती झाड़ू देने वाली भंगन को अपने महल सच्चखण्ड की रानी बना दिया। अब उसके आगे खड़े होकर हम यह तो नहीं कह सकते कि हम बादशाह हैं, हम बहुत ऊँचे हैं हमारे जैसा कौन है? उस मुल्क की भाषा मैं-मैं नहीं तू-तू है। वहाँ अपनी हस्ती खत्म करनी पड़ती है, हम मालिक के बनकर ही मालिक के पास जा सकते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

राह खुदा बिहावला, वालो दस्से पाए।
मन तो हाथी हो रहया , निकसयो क्यों कर जाए।

परमात्मा से मिलने के लिए हमने जिस रास्ते से जाना है वह रास्ता बाल के दसवें हिस्से जितना बारीक है लेकिन हमारा मन हाथी बनकर बैठा है, कहता है मेरी कौम है, मेरा मजहब है, मैं आलम-फाजल हूँ, धनी हूँ। मन को उतना ही बारीक होना पड़ेगा जितना वह रास्ता बारीक है।

अपना आभार प्रकट करने या नम्रता प्रकट करने का यही एक तरीका है कि हम अंदर जाए क्योंकि अंदर जाए बिना सच्ची नम्रता नहीं आती। हम बाहर जो नम्रता धारण करते हैं वह दिखावे की होती है। पता नहीं कब हमारे अंदर अहंकार पैदा हो जाए, बाहरी नम्रता दुनियां को धोखा देने के बराबर है।

बहुत से प्रेमियों को पता है कि हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भी महाराज कृपाल के आगे-पीछे घूमते थे, आपका आदर करते थे। अनेको मंत्री आपके पास आकर नेक सलाह भी लेते थे लेकिन आप उस पर दयाल हुए जिसने गरीबी धारी हुई थी, आप बिना बुलाए ही राजस्थान चलकर आए।

कोई भी मालिक के बैठने की जगह बनाए, अपनी आत्मा से उस मालिक को गुरु परमात्मा को आवाज लगाए, वह आता है। उसे बाहर से बुलाने की जरूरत नहीं। बेशक मकान बंद हो! तूफान चल रहा हो! चाहे हम सात समुद्र पार बैठे हो! हम जहाँ भी परमात्मा को याद करेंगे वह हमारे पास होगा। गुरु परमात्मा नम्रता और प्यार के बिना प्रकट नहीं होता बेशक वह हमारे पास ही रहता है।

परमात्मा कृपाल के जीवनकाल का वाक्या है। मैं पंजाब के गाँव टपाली गया। वहाँ एक उदासी साधु ने जलधारा किया था, कई गाँवों के लोग इकट्ठे होकर उसका होम वगैरहा कर रहे थे।

मैंने भी अपनी जिंदगी में इस तरह के कर्मकाण्ड किए हैं। मेरे दिल में ख्याल आया कि बाबा के दर्शन कर लें। जब मैं उसके नज़दीक पहुँचा तो बाबा चारपाई पर बैठा था संगत उसके आस-पास बैठी थी। मैं अभी थोड़ी ही दूर था कि बाबा ने कहा, ''चारपाई लाओ, कुर्सी लाओ वह जो आ रहा है मुझे उसके पीछे सफेद कपड़े, सफेद दाढ़ी, मोटी-मोटी आँखों वाला शक्तिशाली आदमी दिखाई दे रहा है।'' बाबा ने मुझे चारपाई पर बैठने के लिए कहा। मैंने कहा कि मैं नीचे ही ठीक हूँ लेकिन उसने मुझे कपड़ा बिछाए बिना बैठने नहीं दिया। वह बार-बार यही कह रहा था कि मुझे तेरे पीछे कोई दिखाई दे रहा है। मैंने कहा, ''वह मेरा गुरु है।''

आप सोचकर देखें! उस समय हुजूर कृपाल कहाँ सतसंग दे रहे होंगे, किसके साथ इंटरव्यू कर रहे होंगे लेकिन पंजाब में उस उदासी साधु को कैसे दिख गए? गुरु हमेशा सेवक के साथ होता है जिनका थोड़ा सा भी मन टिकता है वह देख लेते हैं कि इसके पीछे कौन खड़ा है?

कई बार ऐसे वाक्य सतसंग में भी हो जाते हैं। कई प्रेमी इस बात की अगुवाही देते हैं कि हमने आपके पीछे दो ताकतें देखी हैं। वेनकुअर में तो किसी ने मेरे पीछे बाबा बिशनदास को भी देखा जबकि मैंने कभी उनका स्वरूप ब्यान नहीं किया कि उनका कैसा शरीर था, न ही उनकी कोई तस्वीर है। बाबा बिशनदास जिस तरह साफा बाँधते थे प्रेमी ने उसी तरह ब्यान किया।

ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसमें गुरु नहीं। हम तो धरती, आकाश, पानी और साँस भी गुरु के ही समझते हैं। क्या हम गुरु के आगे यह कहते हुए शोभा प्राप्त करते हैं कि हम तुझसे ऊँचे है। सतनाम उसका है, सच्चखण्ड उसका है; वही सेवक को शान्ति देने वाला है।

हमें सब कुछ देने वाला गुरु है, हम उसके आगे नम्रता से ही फायदा उठा सकते हैं। गुरु बड़ी ऊँची हस्ती होता है। उसने मन इन्द्रियों से संघर्ष करके उन पर काबू पाया होता है। वह किसी चीज़ का गुलाम नहीं होता। उसने खुद मुक्ति प्राप्त की होती है और अपने सेवकों को मुक्त करता है। गुरु अर्जुनदेव कहते हैं:

जप-तप संयम धर्म न कमाया सेवा साध न जानेया हर राया।
कहो नानक हम नीच कर्मा शरन पड़े की राखो शरमा।।

आपने अपने गुरु को कुल मालिक समझकर बहुत सेवा की फिर भी आप कहते हैं कि हमने कुछ नहीं किया हम तेरी शरण में आए हैं तू हमारी लाज रख। गुरु सतसंगी के अंदर 'शब्द-रूप' होकर बैठा होता है। सतसंगी की तन-मन से इच्छा होती है कि मैं अपने गुरु को प्रकट करूँ लेकिन वह तो चोरो, कामियों को भी जाकर दर्शन दे देता है।

महाराज सावन सिंह जी के बड़े लड़के का नाम वचिंत सिंह था, वह न्यारा था। उसके बैल चुराने के लिए चोर आते थे। वे चोर जब भी आते उन्हें आगे एक बूढ़ा नजर आता था। वह बूढ़ा उनसे पूछता, '' क्यों! कैसे आए हो?'' तीन चार दिन ऐसा ही होता रहा। आखिर उन चोरों ने वचिंत सिंह के पास जाकर पूछा कि हम तीन दिन से बैल चुराने की कोशिश कर रहे हैं, हम जब भी बैल चुराने आते हैं तो यहाँ एक बूढ़ा होता है वह हमें बैल नहीं ले जाने देता।

बचिंत सिंह ने कहा कि वह सन्त हैं। वह दुनियावी तौर पर मेरे पिता लगते हैं। आखिर उन चोरों ने भी महाराज सावन सिंह जी से नामदान प्राप्त किया। वह तो बुरे लोगों को भी दर्शन देकर अपना बना लेता है। यह उसकी मौज होती है।

***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से 16 पी.एस. आश्रम में सतसंगो का कार्यक्रम इस प्रकार है:

3, 4, 5	अगस्त	2012
7, 8, 9, 10, 11	सितम्बर	2012
26, 27, 28	अक्टूबर	2012
23, 24, 25	नवम्बर	2012
28, 29, 30	दिसम्बर	2012